Dr Jaya
Deptt of Sociology
B A Part I subsidiary

SOCIAL CONTROL : MEANING, TYPES, AGENCIES AND MECHANISM.

सामाजिक नियन्त्रण की अवधारणा का समाजशास्त्रीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक संरचना में दृढ़ता एवं समन्वय रखने वाली शक्तियों के संदर्भ में जितना साहित्य रचा गया उसे 'सामाजिक नियन्त्रण' के शीर्षक के अन्तर्गत रखा गया है। अमेरिकी समाजशास्त्री ई० ए० रॉस पहला व्यक्ति था जिसने सामाजिक नियन्त्रण विषय पर 1901 में अपनी कृति 'Social Control' में व्यवस्थित विचार व्यक्त किये।

सामाजिक नियन्त्रण के द्वारा व्यक्तियों के व्यवहारों को समाज के स्थापित प्रतिमानों के अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रकार सामाजिक नियन्त्रण वह विधि है जिसके द्वारा एक समाज अपने सदस्यों के व्यवहारों का नियमन करता है। सामाजिक नियन्त्रण के द्वारा एक समाज अपने सदस्यों को उनके निर्धारित भूमिकाएँ, प्रतिमानों, नियमों का पालन करने तथा व्यवस्था बनाये रखने के लिए प्रेरित

करता है। प्रत्येक समाज अपने सदस्यों से यह अपेक्षा करता है कि वे उसकी संस्कृति के अनुरूप व्यवहार-प्रतिमानों, प्रथाओं, रीति-रिवाजों, मूल्यों, आदर्शों एवं कानूनों के अनुरूप आचरण कर समाज को स्थायित्व एवं व्यवस्था प्रदान करें। इसलिए वह अपने सदस्यों पर कुछ नियन्त्रण लगाता है। इसी प्रकार समाज में जब नयी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं तब भी समाज अपने सदस्यों के व्यवहारों पर अंकुश रखता है जिससे कि नयी परिस्थितियों से प्रभावित होकर लोग सामाजिक ढाँचे को तोड़ न दें। सामाजिक नियन्त्रण एक अन्य दृष्टि से भी आवश्यक है - हॉब्स के अनुसार, क्लेशकारी, अराजक एवं अव्यवस्थित स्थिति से बचने के लिए ही प्रत्येक समाज नियन्त्रण की व्यवस्था करता है, नियमों एवं कानूनों का निर्माण करता है।

इस प्रकार सामाजिक नियन्त्रण का तात्पर्य सम्पूर्ण समाज-व्यवस्था के नियमन से लिया जाता है जिसका उद्देश्य सामाजिक आदर्शों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करना है।

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार, "सामाजिक नियन्त्रण का अर्थ उस तरीके से है जिससे सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था की एकता और उसका स्थायित्व बना रहता है। इसके द्वारा यह समस्त व्यवस्था एक परिवर्तनशील सन्तुलन के रूप में क्रियाशील रहती।"

NATURE AND IMPORTANCE OF SOCIAL CONTROL

विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि सामाजिक नियन्त्रण की प्रकृति के बारे में निम्नांकित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं

1.) सामाजिक नियन्त्रण में व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सामाजिक प्रतिमानों के अनुरूप आचरण करे।

2.) सामाजिक नियन्त्रण समाज में संगठन एवं एकरूपता पैदा करता है।

3.) सामाजिक नियन्त्रण तीन स्तरों पर होता है - समूह का समूह पर नियन्त्रण, समूह का व्यक्तियों पर नियन्त्रण, व्यक्ति का व्यक्तियों पर नियन्त्रण।

Scanned by CamScanner

4.) सामाजिक नियन्त्रण से सामाजिक सम्बन्धों में स्थिरता एवं एकरूपता आती है।

5.) सामाजिक नियन्त्रण से तनाव एवं संघर्षों को कम तथा सहयोग स्थापित किया जाता है।

6.) सामाजिक नियन्त्रण उन साधनों एवं विधियों की ओर संकेत करता है जिनके द्वारा व्यक्तियों के व्यवहारों को एक आवश्यक साँचे में ढाला जाता है।

7.) सामाजिक नियन्त्रण द्वारा विघटनकारी प्रवृत्तियों पर अंकुश रखा जाता तथा उन्हें कुचल दिया जाता है।

8.) सामाजिक नियन्त्रण के लिए दण्ड एवं पुरस्कार - दोनों विधियों का प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि किसी भी समाज का अस्तित्व एवं निरन्तरता बनाये रखने के लिए समाज में दृढ़ता, संगठन, एकरूपता एवं नियन्त्रण होना अति आवश्यक है। मानव की अराजक और व्यक्तिवादी प्रवृत्ति पर नियन्त्रण लगाये बिना समाज में संतुलन रखना कठिन हो जायेगा।

Scanned by CamScanner